MR. DEPUTY CHAIRMAN: The names mentioned in the list are not important, what has been agreed to is important. Now, let Mr. Bhandari start. *(Interruptions)* Next will be yours. *(Interruptions)* Okay. *(Interruptions)*

श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश): सर, मैं मुंबई का हूं और मैंने नोटिस दिया हुआ है। ...(व्यवधान)...

श्री अबू عاصم اعظمی: سر، میں ممبئی کا ہوں اور میں نے نوٹس دیا ہوا ہے۔ مداخلت۔

श्री उपसभापति: आपको भी बुलाऊंगा। आपको भी opportunity मिलेगी।

SHORT DURATION DISCUSSION

Recent incidents of attack on North Indians in various parts of Maharashtra

प्रो॰ राम देव भंडारी (बिहार): माननीय उपसभापति जी, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं और जो अन्य पार्टियां हैं, जिन्होंने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया है, उनका भी आभार व्यक्त करता हूं।

महोदय, महाराष्ट्र में पिछले कुछ दिनों से जो कुछ हो रहा है, जिस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं, उत्तर भारतीयों पर जिस प्रकार के हमले हो रहे हैं, हिंसात्मक हमले हो रहे है, बिहारियों को वहां से भागने की धमकी दी जा रही है, वहां से कई हजार बिहारी पलायन भी कर गए हैं, देश के लिए यह गंभीर चिंता का विषय है। एक पोलिटिकल पार्टी है, महाराष्ट्र नव-निर्वाण सेना, उस पोलिटिकल पार्टी ने ...(व्यवधान)

श्री शरद यादव (बिहार): पोलिटिकल पार्टी नहीं है।

प्रो॰ राम देव भंडारी: पोलिटिकल पार्टी नहीं बनी है, सर। उसका रजिस्ट्रेशन हुआ होगा, उन्होंने इलेक्शन कमीशन में रजिस्ट्रेशन कराया होगा। ...(व्यवधान)... उन्होंने पिछले दिनों महाराष्ट्र में एक नारा दिया कि महाराष्ट्र, महाराष्ट्रियों का है और दूसरे प्रदेश के लोग, खासकर उत्तर भारतीय लोगों की महाराष्ट्र में कोई जगह नहीं है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) पीठासीन हुए]

महोदय, यह नारा महाराष्ट्र में कुछ दिन पहले भी लगा था, जब बिहार के छात्र वहां रेलवे का एग्जामिनेशन देने गए थे। उस समय इसी परिवार का, सेना परिवार का, ठाकरे परिवार का, नारा लगा था और शिव सैनिकों ने बिहार के जो बच्चे इंटरव्यू देने गए थे, उनको स्टेशन पर मारा-पीटा, उनके एडमिट कार्ड थे उनको फाड़ दिया और फिर से गाड़ी में बैठा दिया कि बिहार वापस चले जाओ। उसी तरह इस बार उसी परिवार से निकले राज ठाकरे ने उसको दुहराया है। उन्होंने भड़काऊ भाषण दिया, इस प्रकार का उत्तेजक भाषण दिया, विषैला बयान दिया, मैं उसको विषैला बयान कहता हूं, विषैला बयान, जो बयान नफरत फैलाता है, एक-दूसरे के साथ लड़ाता है, वैसा बयान उन्होंने दिया। उस बयान के बाद उनके सैनिकों ने मुम्बई में जो अराजकता फैलाई, जो हिंसा उत्तर भारतीयों के साथ, बिहारियों के साथ की, वह बड़ी शर्मनाक है और पूरे सदन को इसकी भर्त्सना करनी चाहिए, घोर निंदा करनी चाहिए।

महोदय, जो छोटे-छोटे काम करने वाले लोग हैं, टैक्सी वाले हैं, खोमचे वाले हैं, सब्जी बेचने वाले हैं, उनको भी नहीं बख्शा गया। जो श्रमिक हैं, जो भवन निर्माण के कार्यों में लगे हुए हैं, जो गरीब हैं, जो हजारों मील दूर बिहार से, उत्तर प्रदेश से जाकर मुम्बई को बनाने का, चमकाने का काम करते हैं, जो लोग खून-पसीना बहाकर मुम्बई को सींचते हैं, ऐसे लोगों के साथ उन्होंने हिंसा की, मारपीट की।

महोदय, कुछ लोग हैं, जिनको देश की अस्मिता और स्वाभिमान की चिंता नहीं है। उनको महाराष्ट्र के स्वाभिमान और अस्मिता की याद आती है। मैं जानना चाहता हूं कि अगर सभी प्रदेशों के लोग इसी तरह अपने प्रदेश की अस्मिता और स्वाभिमान की बात करें, तो भारत की अस्मिता और स्वाभिमान की बात कौन करेगा? यह बहुत खतरनाक स्थिति है, संविधान के जो बुनियादी अधिकार हैं उन अधिकारों की हत्या करने का प्रयास किया जा रहा है, वहां के जो अलगाववादी तत्व हैं, अलगाववादी पार्टियां हैं, जो देश में अलगाववाद पैदा करना चाहतो हैं। वे चाहते हैं कि देश जो आज एक है, उसे

खंडित किया जाए और वे उसे अपने कार्यों से खंडित करना चाहते हैं। महोदय, कांस्टिट्यूशन में प्रावधान है कि किसी भी प्रदेश का आदमी किसी दूसरे प्रदेश में जाकर अपनी सेवाएं दे सकता है, रोजी-रोटी कमा सकता है। इस बारे में कांस्टिट्यूशन की ओर से कोई बंधन नहीं है, यह अधिकार कांस्टिट्यूशन ने दिया है। यह देश की एकता और अखंडता की भी बात है और संविधान की इन मूल बातों को जो तोड़ने का प्रयास कर रहा है, वह देश की एकता और अखंडता को तोड़ रहा है।

महोदय, हमारी कंट्री का फेडरल स्ट्रक्चर है, संघीय ढांचा है और संघीय ढांचे में, जैसे मैंने कहा कि इस ढांचे में जो इस देश के नागरिक हैं, चाहे किसी प्रदेश के हों उन्हें भी स्वाभिमान से, सम्मान से जीने का अधिकार है।

महोदय, हम लोग तालिबानी की बात सुन चुके हैं यह जो तरीका है लोगों को रोकने का, लोगों पर हिंसा करने का, यह सभ्य लोगों का तरीका नहीं है, इसको हम तालिबानी तरीका कह सकते हैं। यह तालिबानी तरीका है, जिस तरीके से एक सभ्य देश में, एक लोकतांत्रिक देश में इस प्रकार से हिंसक कार्रवाई करके उसी देश के नागरिकों को, एक प्रदेश के नागरिकों को, मारा-पीटा जाता है, उन्हें उनके अधिकारों से वंचित किया जाता है। महोदय, दुख और खेद की बात तो यह है कि इस हिंसा की जायज भी ठहराया जाता है। उनके नेता ने कहा कि यह जो हिंसा हो रही है, वह जायज है।

महोदय, सुप्रीम कोर्ट में यह बात गई थी और सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि देश को खंडित करने की अनुमति किसी को नहीं दी जा सकती।

महोदय, भूमि-पुत्र क्या होता है? भूमि-पुत्र का मतलब किसी जिले का पुत्र, किसी प्रदेश का पुत्र या भारत देश का पुत्र? मैं तो भूमि-पुत्र का अर्थ भारत देश का पुत्र समझता हूं। इस भूमि-पुत्र का नारा लगाकर, महाराष्ट्र का नारा लगाकर लगभग चार दशकों से वहां राजनीति की जा रही है। हम सभी ने देखा है कि महाराष्ट्र के लोगों ने इनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। मैं बिहार के लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि जब कभी भी, चाहे वह असम में हो या महाराष्ट्र में हो, बिहारियों पर हमला होता है, उसकी प्रतिक्रिया बिहार में नहीं होती है। बिहार के लोग अहिंसा में विश्वास करते हैं। बुद्ध और महावीर उस प्रदेश में हुए हैं, बिहार के लोग अहिंसा नें विश्वास करते हैं। उन पर हमला भी होता है तो अहिंसात्मक तरीके से उसका मुकाबला किया जाता है, प्रतिक्रिया में हमला नहीं करते। यह हमने बार-बार देखा है।

महोदय, आज का जो चमकता हुआ मुम्बई है ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): भंडारी जी, आपकी बात हो गई, अब समाप्त कीजिए।

प्रो॰ राम देव भंडारी: सर, मैंने चर्चा को इनिशियेट किया है। यह जो चमकता हुआ मुम्बई है, शानदार मुम्बई, जिसको देश की आर्थिक राजधानी कहते हैं, यह सिर्फ इसी एक प्रदेश के लोगों के द्वारा ही नहीं बनाई गई है, बल्कि देश के सभी राज्यों के लोगों का बड़ा योगदान है, खासकर उत्तर भारत के लोगों का इसमें बड़ा योगदान है। छोटा-छोटा काम जिससे मुम्बई चमकता है, वह काम उत्तर भारत के लोगों ने, बिहार के लोगों ने वहां किया है। महोदय, एक तरह से कहा जाए तो वहां जो बिहार के और उत्तर भारत के लोग हैं, वे मुम्बई की लाइफ लाइन हैं। अगर उत्तर भारत और बिहार के लोग एक दिन के लिए मुम्बई में काम ठप्प कर दें तो मुम्बई की लाइफ लाइन जाम हो जाएगी। महाराष्ट्र में ज्यादातर अमीर लोग गुजराती हैं, पारसी हैं, मारवाड़ी हैं, पंजाबी हैं, इनकी बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां हैं, लेकिन इन फैक्ट्रियों को कौन चलाता है? इनको उत्तर भारत बिहार के लोग चलाते हैं ....(व्यवधान)

सुश्री मैबल रिबैलो (झारखंड): बिहारी बाबू आ गए।

प्रो॰ राम देव भंडारी: मैं इनके बारे में भी बोलने जा रहा हूं ....(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप लोग Interrupt मत करिए, वैसे ही ज्यादा समय आपके लीडर को दिया जा रहा है, आप प्लीज डिस्टर्ब मत करिए।

प्रो॰ राम देव भंडारी: महोदय, एक छोटी खोली में 8-10-20-25 लोग रहते हैं, वे बड़ी तकलीफ से रहते हैं, बड़े कष्ट में रहते हैं, लेकिन जब वे काम के लिए निकलते हैं, तो पूरी ईमानदारी से और निष्ठा से काम करते हैं और मुम्बई की सेवा करते हैं, महाराष्ट्र की सेवा करते हैं, देश की सेवा करते हैं। अभी शत्रुघ्न सिन्हा जी आए हैं, मैं थोड़ी सी चर्चा बॉलीवुड के बारे में भी करूंगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): देखिए, आपने यह Discussion Initiate किया है, नियम के हिसाब से आपके पास 3 मिनट थें, इसलिए मेरा अनुरोध है कि आप इतना लंबा न बोलें। आपने अपनी बात बहुत अच्छी तरह कह दी है। इस डिस्कशन का समय निर्धारित है, हमें नियम से चलना पड़ेगा।

श्री रूद्रनारायण पाणि (उड़ीसा): बिहार के राज्यपाल के साथ जो हुआ, वह बोल दें ....(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): पाणि जी, आप रहने दीजिए, इनको जो बोलना है, बोलने दीजिए ....(व्यवधान) आप अपने नेता को बता दीजिए, आपकी बात वे बोल देंगे ....(व्यवधान)

सुश्री मैबल रिबैलो: इनको हमेशा बीच में बोलना होता है ....(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): प्लीज, बैठ जाइए ....(व्यवधान) भंडारी जी, आप बोलिए, केवल 2 मिनट और बोलिए ....(व्यवधान)

सुश्री मैबल रिबैलो: हमेशा इनको बीच में बोलना होता है। चाहे कोई भी पार्टी वाला बोले, इनको जरुर बीच में बोलना होता है ....(व्यवधान) इनसे ज्यादा disturb कोई नहीं करता है ....(व्यवधान)

श्री रूद्रनारायण पाणि: आप हमसे ज्यादा हैं ....(व्यवधान)

सुश्री मैबल रिबैलो: बिल्कुल नहीं ....(व्यवधान)

श्री रूद्रनारायण पाणि: मैं पिछले 3 दिनों से बिल्कुल शांति से बैठा हूं, मैं देख रहा हूं ....(व्यवधान) मैं पिछले 3 दिनों से आप लोगों का बर्ताव देख रहा हूं। आपके मेंबरों का किस तरह का व्यवहार है, यह मैं देख रहा हूं, पिछले 3 दिनों से देख रहा हूं ....(व्यवधान)

प्रो॰ राम देव भंडारी: सर, मेरा समय नहीं जाना चाहिए ....(व्यवधान)

श्री रूद्रनारायण पाणि: पिछले 3 दिनों का वीडियो देखो ....(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): पाणि जी, प्लीज डिस्टर्ब मत करिए ....(व्यवधान)

श्री रूद्रनारायण पाणि: रिबैलो जी, आप हमको मत सिखाना, हम जाकर सोनिया जी के सामने शिकायत करेंगे .... (व्यवधान) हम जाकर सोनिया जी से शिकायत करेंगे ....(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): पाणि जी, बैठ जाइए ....(व्यवधान)

श्री रूद्रनारायण पाणि: आप महिला हैं, आप महिला हैं, इसलिए मैं ज्यादा नहीं बोल रहा हूं ....(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): पाणि जी, आप बैठ जाइए ....(व्यवधान) आप महिलाओं से पंगा मत लीजिए, वरना मुश्किल में फंस जाएंगे ....(व्यवधान)

प्रो॰ राम देव भंडारी: महोदय, मैं एक-दो बातें कहकर अपनी बात समाप्त करुंगा। अभी शत्रुघ्न सिन्हा जी हाउस में आए हैं। मुंबई का बालीवुड जो आज इतना चमकता है, उसमें भी उत्तर भारतीयों का बड़ा भारी योगदान है, उसमें बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब के भी लोग हैं। बिग बी यानी अमिताभ बच्चन, उत्तर प्रदेश से हैं, यहां शत्रुघ्न सिन्हा जी बैठे हैं, इनको बिहारी बाबू के नाम से ही जाना जाता है। इसी तरह मनोज वाजपेयी हैं, भोजपुरी फिल्मों के मनोज तिवारी हैं, कई ऐसे कलाकार हैं और उनके साथ काम करने वाले लोग हैं, उनकी वजह से मुंबई चमक रहा है। आज बालीवुड, मुंबई से शिफ्ट करके किसी दूसरी जगह चली जाए, मुंबई का बालीवुड अगर नौएडा में या दूसरी जगह चला जाए, तो मुंबई का क्या होगा, इसका अंदाजा आप लगा सकते हैं।

मैं एक बात और कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा कि ये जो पर्व और त्यौहार होते हैं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, ये पूरे देश की सांस्कृतिक धरोहर होते हैं। महाराष्ट्र में गणपति बप्पा मोरिया यानी गणेश जी की पूजा होती है। मैं अपने महाराष्ट्रीयन भाइयों से पूछना चाहता हूं कि महाराष्ट्र में क्या गणेश जी की जो पूजा होती है, वह सिर्फ महाराष्ट्रीयन करते

हैं। मैं महाराष्ट्रीयन उनको मानता हूं जो शांतिपूर्वक महाराष्ट्र में बिहारियों के साथ यह त्यौहार मनाते हैं। जो सही महाराष्ट्रीयन हैं, जिनको महाराष्ट्र की चिंता है, उन्होंने बिहारियों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया है। ये राजनीति कर रहे हैं, एक सीमित स्वार्थ के लिए अपनी राजनीति को चमकाने के लिए इस तरह का नारा देते हैं। बिहार में बड़े पैमाने पर छठ पर्व मनाया जाता है, बिहार में ही नहीं, बिहार और उत्तर प्रदेश के जो लोग विदेशों में रहते हैं, वे भी छठ पर्व मनाते हैं। मुंबई में, महाराष्ट्र में भी बिहार के लाखों लोग रहते हैं उनकी जो धार्मिक आस्था है, जो सांस्कृतिक आस्था है, उस आस्था को वह वहां मनाते हैं। अब छठ पर्व के लिए उनको एतराज है कि बिहारी छठ पर्व क्यों मनाते हैं। वह कहते हैं कि यहां समुद्र है, यहां गंगा तो नहीं है, जहां छठ पर्व मनाते हैं उनको इतिहास, भूगोल का कुछ पता नहीं है, ये सारी नदियां जाकर समुद्र में ही मिलती है। वहां छठ पर्व मनाया जाता है और मनाते रहेंगे। वे जो कर रहे हैं, यह बात उनकी चलने वाली नहीं है। महोदय, यह बहुत खतरनाक बात है, गंभीर चिंता की बात है। ये constitution का उल्लंघन कर रहे हैं, देश को तोड़ने का काम कर रहे हैं, इसलिए ऐसे लोगों के खिलाफ राजद्रोह का मुकदमा चलाया जाए। अगर इलेक्शन कमीशन में इनका रजिस्ट्रेशन है तो रजिस्ट्रेशन को कैंसिल करने के लिए, रद्द करने के लिए सरकार को कार्रवाई करनी चाहिए।

महोदय, मुझे और भी बातें करनी थी, मगर आप मुझे बार-बार रोक रहे हैं, इसलिए मैं समाप्त कर रहा हूं। मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Mr. Mohammed Amin. Just ten minutes please.

श्री मोहम्मद अमीन (पश्चिमी बंगाल): सर, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। महीनों से महाराष्ट्र में जो कुछ हो रहा है, यह हैरतनाक भी है, अफसोसनाक भी है और शर्मनाक भी, और मुझे कहना पड़ता है कि "दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से, इस घर को आग लग गई घर के चिराग से"। सर, महाराष्ट्र में लाखों की तादाद में बिहार के लोग हैं और आज से नहीं हैं बल्कि जिस दिन से मुंबई शहर का जन्म हुआ, उसी दिन से हैं, मेहनतकश लोग हैं, मुंबई शहर की तामीर में इन्होंने अपना खून-पसीना बहाया है। बिहार के लोग, उत्तर प्रदेश के लोग दूसरी जगहों के भी लोग हैं। तमाम मेट्रोपोलिटन सिटीज का यही हाल है। बिहार के लोग कोलकाता में भी हैं। एक जमाना था, जब बिहार हिन्दुस्तान में सबसे आगे था, नालंदा यूनिवर्सिटी उसका सबूत है। आज हालात के उतार-चढ़ाव में बिहार का सूबा पिछड़ गया है, Socio-economic condition अच्छी नहीं है, गरीब लोग रोटी की तलाश में दर-दर भटक रहे हैं। बजाए इसके कि उनके साथ हमदर्दी का इजहार किया जाए, उनको अपने सीने से लगाया जाए, उनके खिलाफ नफरत का प्रचार हो रहा है। पिछले एक महीने में जो कुछ हुआ है, उसमें जानी नुकसान तो बहुज ज्यादा नहीं हुआ है, एक ही आदमी के मरने की खबर है, लेकिन हमले बहुत हुए हैं, छोटी-मोटी 775 वारदातें हुई हैं। इन वारदातों में जो लोग बिल्डिंग की तामीर का काम करते हैं, जिनको राजमिस्त्री या राजमजूरा कहा जाता है, वे हैं। जो लोग मुंबई में, पुणे में टैक्सी चलाते हैं, वे हैं, उनकी टैक्सियों पर हमले हुए, उनका कारबार रूक गया और सबसे बड़ी बात यह है कि लोग खौफ के मारे रात में सो नहीं पाते हैं, यह कैसी आजादी है। यह कैसा देश है कि जहां लोग अपने घर में रात को चैन की नींद सो नहीं पाते हैं। इससे ज्यादा तकलीफ की बात और कुछ हो नहीं सकती है। बिहार विधान सभा में गवर्नर के भाषण के दौरान इसकी शुरूआत हुई थी, भाषण के दौरान एम.एल.ए. लोगों में किसी ने कहा कि आप महाराष्ट्र वापस जाएं ...(व्यवधान)...।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): No interruptions ...(*Interruptions*)...

श्री मंगनी लाल मंडल (बिहार): *

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Nothing will go on record. ...(*Interruptions*) No interruptions please. (*Interruptions*)

मैं कुछ Allow नहीं कर सकता ।...(व्यवधान)... भंडारी जी, आप बोल चुके हैं, प्लीज़ इनको बोलने दीजिए शांति से। ...(व्यवधान)... आप लोग डिस्टर्ब मत कीजिए। ...Please sit down. ...(*Interruptions*)... No, I can't

*Not recorded.

allow Mandal Ji, please ... Nothing will go on record other than Mr. Amin's speech. ...(*Interruptions*)... प्लीज, कुछ रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा। केवल अमीन साहब की स्पीच जाएगी। बोलिए अमीन साहब ...(व्यवधान)... करेक्ट करने की दरकार नहीं है, It's all right. अमीन साहब, बोलिए।

श्री मोहम्मद अमीन: महाराष्ट्र नवनिर्माण समिति ने श्रीमती सोनिया गांधी के पास एक एस.एम.एस. भेजा और यह कहा कि महाराष्ट्र के गवर्नर को तो वापस भेज दीजिए, लेकिन जो पच्चीस लाख बिहारी हैं, उनको भी बिहार वापस भेज दीजिए। ...(व्यवधान)... तो इस तरह से शुरूआत हुई। अब हम लोग देखते हैं कि बिहार के लोगों पर कभी असम में हमला होता है, कभी ...(व्यवधान)...।

श्री राजनीति प्रसाद (बिहार): *

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): फिर आप खड़े हो गए? राजनीति प्रसाद जी, फिर आप खड़े हो गए? ...(व्यवधान)... ये कोई Unparliamentary बात नहीं बोल रहे हैं। आप जो बोलेंगे, वह रिकॉर्ड में नहीं जाएगा। वे जो कुछ बोलेंगे, वही रिकॉर्ड में जाएगा। ...(व्यवधान)... उनको बोलने दीजिए, उनका अधिकार है, उनको बोलने दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री मोहम्मद अमीन: इसलिए मैं जो कुछ बात कहना चाहता हूं ...(व्यवधान)...

श्री राजनीति प्रसाद: *

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): इनको बोलने दीजिए ...बोलिए अमीन साहब।

श्री मोहम्मद अमीन: इसमें एक तरह की राजनीति है।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप जल्दी बोल दीजिए, अब चार मिनट हैं आपके।

श्री मोहम्मद अमीन: जी हां,। ...(व्यवधान)... ये लोग बोलने दें, तब न। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): अमीन साहब, बोलिए। अपनी बात जल्दी से बोल दीजिए।

श्री मोहम्मद अमीन: पुणे में पचपन हजार फ्लैट्स का निर्माण हो रहा है और उसमें जो काम करने वाले लोग हैं, वे सब बिहार के हैं। साठ फीसदी लोग वह काम छोड़कर चले गए हैं और काम रूक गया है। अब बताइए, इसका क्या नतीजा निकलेगा? बिहार के लोग जब पंजाब में खेतों में काम करने के लिए जाते हैं, तब वहां उनके ऊपर हमला होता है, कभी असम में हमला होता है, तो इस तरह अगर देश में यह प्रदेश की बात बढ़े, तो हिंदुस्तान के इतिहास का क्या होगा? हम यह समझते हैं कि महाराष्ट्र की जो स्टेट गवर्नमेंट है, वह इस काम में बिल्कुल नाकाम है। उसी की यह जिम्मेदारी बनती थी कि वह शांति बनाकर रखे और सब लोग मिल-जुलकर रहें, इसका इंतजाम करे। यह अधिकार संविधान ने दिया है कि हिंदुस्तान का कोई भी शहरी देश के किसी भी हिस्से में जा सकता है, काम कर सकता है, मकान बना सकता है, रह सकता है, इलैक्शन में वोट भी दे सकता है, यह अधिकार कोई छीन नहीं सकता, लेकिन इसकी गारंटी करने की जरूरत है और इस सदन से हम लोग यह आवाज बुलंद करते हैं कि बिहारियों के ऊपर यह जुल्म महाराष्ट्र में बंद होना चाहिए, उनको इज्जत के साथ जिन्दगी गुजारने का मौका देना चाहिए।

"हर रंग व बू के गुल हैं, इस वादी-ए-चमन में,
इतना महक रहा है, ये गुलिस्तां हमारा।
नस्लो-जबान रंग और मजहब जुदा हैं लेकिन
चलता है लेके सबको ये कारवां हमारा।
इसके वतन का नग़मा इकबाल का तराना,
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा।"

*Not recorded.

श्री राशिद अल्वी (आंध्र प्रदेश): सर, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूं। जिस मौजू पर पार्लियामेंट के अंदर बहस हो रही है, यह बदकिस्मती है कि आज हमें पार्लियामेंट के अंदर इस मौजू पर गुफ्तगू करनी पड़ रही है। देश की कुछ सियासी जमातें हैं, जिनका हमेशा से यह कैरेक्टर रहा है महाराष्ट्र के अंदर जो कुछ हुआ, कोई नई बात नहीं है।

उंगलियां उठती रहीं, सारे जमाने में मगर,

बेनियाजाना वो अपने साज़ पर गाते रहे।

सारी दुनिया क्रिटिसाइज़ करती रहे, सारी दुनिया कहती रहे कि यह हिन्दुस्तान के इत्तेहाद के खिलाफ है, लेकिन छोटे से सियासी फायदे के लिए वे अपने उसी साज़ पर गाना गाते रहते हैं। आज इस हाउस में मैं देख रहा हूं कि बंगाल की बात होती है तो बिहार खड़ा हो जाता है, बिहार की बात होती है, तो कोई दूसरा प्रदेश खड़ा हो जाता है-फित्तरी है। किसी एक प्रदेश पर हमला होगा तो वे लोग खड़े होंगे। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि क्या यह हिन्दुस्तान के हक में है? क्या यह हिन्दुस्तान को मुत्तहिद रखने की बात है? महाराष्ट्र के वे छोटे से लोग, जिनकी पार्टी का नाम भी हम नहीं जानते- वे यह बात चाहते थे कि हिन्दुस्तान के मीडिया में उनकी चर्चा हो, टेलिविजन पर उनकी चर्चा हो, पार्लियामेंट के अंदर बहस हो। वे सब टीवी के पर्दे पर देख रहे होंगे कि आज पार्लियामेंट में उस बात पर बहस हो रही है, जिस बात को हमने उठाया। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता। लेकिन मैं बहुत अदब के साथ पूछना चाहता हूं कि क्या वे वही लोग हैं जो अपने आपको देश भक्त कहते हैं? क्या ईमानदारी के साथ वे हिन्दुस्तान के इत्तहाद के लिए, हिन्दुस्तान के मफात के लिए सोचते हैं? ...(व्यवधान)... भारतीय जनता पार्टी उनकी allied है। मुझे याद है, भारतीय जनता पार्टी के एक बड़े नेता ने ... (व्यवधान)...

श्री जयंती लाल बरोट (गुजरात): उनकी allied नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: उन्होंने कहा कि एक पार्टी है। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप इंटरप्ट मत करिए। इसमें कुछ भी अनपार्लियामेंटरी नहीं है। ...(व्यवधान)... आप लोग हर बात पर ऑब्जेक्शन मत करिए। ...(व्यवधान)... उनको बोलने दीजिए। ...(व्यवधान)... आप बोलिए। ...(व्यवधान)...

श्री राशिद अल्वी: मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता, वे अब इस संसार में नहीं हैं। ...(व्यवधान)... वे मेरे बहुत अच्छे मित्र थे लेकिन उनका भी बयान था कि महाराष्ट्र के अंदर जो बाहर के लोग आ गए हैं, वे ठीक तरीके से महाराष्ट्र में रहेंगे, तभी रह सकते हैं। ...(व्यवधान)... मैं नाम लेना नहीं चाहता। ...(व्यवधान)... बीजेपी के अंदर ...(व्यवधान)... मैं नाम नहीं लेना चाहता, सब लोग समझ गए होंगे। ...(व्यवधान)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: एक दिवंगत नेता के बारे में इस प्रकार ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): पाणि जी, अगर आप हर सेंटेंस के अंदर इस प्रकार से ऑब्जेक्शन करेंगे तो यह अच्छी बात नहीं है। ..(व्यवधान)... आपके अलावा कोई इतना डिस्टर्ब नहीं करता, आप क्यों इतना डिस्टर्ब कर रहे हैं? ...(व्यवधान)... आप चुप रहिए, उनको बोलने दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: सदन को बताएं कि किस तारीख का बयान है? मेरा अधिकार है, ..(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आपका अधिकार है तो उनका भी अधिकार है ..(व्यवधान)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: किस तारीख का बयान है? ..(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Noting will go on record. No interruptions will go on record.

श्री रूद्रनारायण पाणि: *

*Not recorded

SHRI S.S. AHLUWALIA (Jharkhand): Sir, I have a small submission. राशिद अल्वी जी बहुत अच्छा बोल रहे हैं लेकिन पहली बात तो यह है कि ऐसे लोगों का नाम नहीं लिया जाता जो सदन में उपस्थित न हो सके। दूसरा, जो दिवंगत है, उसका तो कभी नहीं लेना चाहिए।

श्री राशिद अल्वी: क्या मैंने नाम लिया? ..(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया: उस बात का उल्लेख किए बगैर भी आप चर्चा में भाग ले सकते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: जहां खड्डा होता है, वहां पानी गिरता है। ...(**व्यवधान**)... मैंने नाम नहीं लिया। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप सुनिए। अहलुवालिया जी जो बात बोल रहे हैं। अल्वी जी, आप सुनिए। (**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: सारी बीजेपी खड़ी है। ...(**व्यवधान**)... आप चैलेंज कीजिए, मैं पार्लियामेंट के अंदर रिकॉर्ड रख दूंगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल (महाराष्ट्र): नाम नहीं लिया है। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: पार्लियामेंट में मैं रिकार्ड रख दूंगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: आपने कहा कि राज ठाकरे जी की पार्टी के साथ हमारा गठबंधन है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): पाणि जी, आपके नेता अहलुवालिया जी ने बोल दिया है, अब आप चुप क्यों नहीं हो रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... उनको मना कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: मैं पार्लियामेंट में रिकार्ड रख दूंगा, उनका बयान रख दूंगा ...(**व्यवधान**)... मैं नाम नहीं ले रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): अल्वी जी, आपने नाम नहीं लिया। आप नाम लीजिए भी मत और अपनी मर्यादा से बात करें, वही अच्छा है। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: मैं कह रहा हूं, अगर बीजेपी मुझे चैलेंज करेगी ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): अहलुवालिया जी जो बोल रहे हैं, वह मर्यादा की बात है।

श्री राशिद अल्वी: पहले राज ठाकरे आपके साथ थे। ...(**व्यवधान**)... अगर बीजेपी के नेता मुझे चैलेंज करेंगे तो मैं उनका बयान पार्लियामेंट के अंदर लाकर रख दूंगा, तब आप कितने शर्मसार होंगे। आप चेहरा नहीं दिखा पाएंगे। लेकिन असल बात यह है कि जिन लोगों ने देश की आजादी की लड़ाई लड़ी, वे इस तरीके के काम कभी कर ही नहीं सकते। जिन लोगों ने देश की लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया, जिनका देश की आजादी की लड़ाई से कोई वास्ता नहीं रहा ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया: महाराष्ट्र पर चर्चा हो रही है और वे क्या बोल रहे हैं? ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: वे इस तरीके के काम कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया: यह इर्रेलेवेंट बोल रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): अब इसमें क्या आपत्ति है? ...(**व्यवधान**)... इसमें कोई आपत्ति नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: 2001 के सेंसस के हिसाब से ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र लाठ (उड़ीसा): ये किस बात को कह रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... इनका आजादी की लड़ाई से कोई वास्ता नहीं

था, ये आजादी की लड़ाई ...(**व्यवधान**)... ये कौन सी आजादी की लड़ाई में लड़े थे। ...(**व्यवधान**)... अभी अगर मैं बोलूंगा तो इनको बड़ा खराब लगेगा। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): यह Irrelevent नहीं है। ...(**व्यवधान**)... उनके प्वाइंट ऑफ व्यू से रेलवेंट है और आपके प्वाइंट ऑफ व्यू Irrelevent है। यह कोई Irrelevent बात नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया: महाराष्ट्र में आज जो ईशू है, उस पर बात करिए। ...(**व्यवधान**)... ये क्या कह रहे हैं? ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): ये उसी पर बात कर रहे हैं तथा यह उनकी मर्जी है कि वह उसको किस तरह से रैफर करें। उसको हम लोग चेंज नही कर सकते। ये कैसे उसको रैफर करते हैं यह उनकी मरजी है। ...(**व्यवधान**)... आप बोलिए जब आपका नम्बर आएगा, आपके नेता का नंबर आएगा वह भी बोलेंगे। उनको ऐसे कोई डिस्टर्ब मत करिए। बोलिए। ...(**व्यवधान**)... आप बोलिए, बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: 2001 के संसेक्स के हिसाब से 42.3 मिलियन लोग एक स्टेट से दूसरे स्टेट में जाते हैं। करीब-करीब 4 करोड़ से ज्यादा लोग हैं जो हिन्दुस्तान में इस तरफ से उस तरफ जाते हैं, जिसमें 22.6 परसेंट महिलाएं हैं और 19.6 परसेंट मेल हैं। बिहार के 3.4 मिलियन लोग दूसरे प्रदेशों में जाकर सैटल हुए हैं और यू॰पी॰ के 5.1 मिलियन लोग जो पचास लाख से ज्यादा हैं, उत्तर प्रदेश से बाहर जाकर सैटल हुए हैं। इसी रिपोर्ट के मुताबिक 37.6 परसेंट वे लोग हैं जो रोजगार के लिए गए हैं, जो रोजी-रोटी कमाने के लिए गए हैं। वे इसलिए गए कि जहां वे रहते थे, वहां उनको खाने के लिए रोटी नहीं मिलती थी और यह बात सिर्फ महाराष्ट्र के साथ नहीं है, यह दिल्ली के साथ है, यह बंगलौर के साथ है, यह कलकत्ता के साथ और जितने मैट्रोपोलिटन सिटीज हैं, यह सबके साथ है। अगर गांव के अंदर खाने को नहीं मिलेगा तो मैट्रोपोलिटिन सिटीज के अंदर लोग जरूर जाएंगे। इसमें करीब 65 फीसदी तादाद ऐसी महिलाओं की भी है जो शादी के बाद चली जाती हैं। सर, जो कुछ महाराष्ट्र के अंदर हुआ, वह हमारे कंस्टीटयूशन के फंडामेंटल राइट के खिलाफ है। महोदय, मैं आपके जरिए कहूंगा कि इलेक्शन कमीशन को चाहिए कि ऐसे तमाम राजनीतिक दल जो देश को बांट देना चाहते हैं, जो हिन्दु-मुसलमान के बीच रिजनलिज्म करके, जो महाराष्ट्रीयन, नॉन-महाराष्ट्रीयन, मराठा और बिहार करते हैं, उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। सर, मैं ज्यादा लंबी बात नहीं करूंगा, मेरा आधा टाइम तो इन्हीं लोगों ने खराब कर दिया। सर, मैं कहूंगा कि हमने रशिया का असर देखा है जो दुनिया की बड़ी ताकत थी, वह छिन्न-भिन्न हो गया, टूट गया, पूरी दुनिया की राजनीति बदल गई। सर, यह बात कोई खिलवाड़ नहीं है, अगर दुनिया का नक्शा पिछले साठ साल के अंदर का देखेंगे तो ज्यादातर मुल्कों के नक्शे बदल गए। ऐसा नहीं है कि हम आंखें बंद करके यह सोच लें कि हिन्दुस्तान एक है और हम जो चाहे करते रहें हिन्दुस्तान एक रहेगा। अगर हिन्दुस्तान का नक्शा भी पिछले दो सौ साल का देखेंगे तो एक जैसा नहीं रहा। अगर साठ साल का देखें तो 14 अगस्त, 1947 को हिन्दुस्तान का नक्शा कुछ और था, 24 घंटे के बाद कुछ और था और आज साठ साल के अंदर गोवा हमारे अंदर शामिल हो गया, सिक्किम हमारे अंदर शामिल हो गया। इस तरह नक्शे की लाइन वह नहीं मिल रहीं जो 60 साल पहले थी। हमारी हजारों एकड़ जमीन चायना के पास हैं। पाकिस्तान बना था जो बाद में दो टुकड़े हो गया, एक मजहब होते हुए भी। यह नारा लगा था कि एक मजहब की बुनियाद पर कौमें बनती हैं, हिन्दुस्तान अलेहदा है, पाकिस्तान अलेहदा बना। लेकिन मजहब की बुनियाद के बावजूद पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए। और आज जो पाकिस्तान है वह पाकिस्तान भी एक नहीं। ब्लूचिस्तान अलेहदा है, पंजाब अलेहदा है, सरहद अलेहदा है। जो यहां हिन्दुस्तान से पाकिस्तान गए थे आज भी वे रिफ्यूजी-मुहाजीर कहलाते हैं। हमें अपने जहनों में यह बात रखनी होगी। अगर हिन्दुस्तान को मुस्तइद रखना है तो अपने छोटे फायदे, अपने सियासी फायदे, इनको हमें त्यागना होगा। और वे तमाम राजनीतिक दल जो इस तरह की राजनीति करते हैं, यह मौका नहीं है कोई लम्बी बात कहने का, लेकिन देश के लिए तीन सबसे बड़े खतरे हैं–कॉस्ट पौलिटिक्स, कम्युनल पौलिटिक्स और तीसरा रिजनलिज्म इससे ज्यादा खतरनाक है। रिज़नलिज्म इससे ज्यादा खतरनाक है। सेक्युलरिज्म की तो आप लोग स्पेलिंग भी नहीं जानते। ...(**व्यवधान**)... अगर सेक्युलर राजनीति करने लगोगे, ...(**व्यवधान**)...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: हमसे मत पूछो। मुंह छुपाने की जगह नहीं मिलेगी। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप इधर बोलिए। आप चैयर को बोलिए। ...(**व्यवधान**)... कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। ...(**व्यवधान**)... आप बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: सर, मैं खत्म कर रहा हूं। अहलुवालिया जी, अटल बिहारी वाजपेयी जी की हम इज्जम करते हैं। ...(**व्यवधान**).., आपने पार्लियामेंट में डाक्युमेंट्स रखे थे अटल बिहारी वाजपेयी के खिलाफ। आप हमें सेक्युलरिज्म का सबक सिखाओगे। अरे, हम सेक्युलरिज्म हैं अगर आपको सेक्युलरिज्म का सबक सीखना है, तो हमसे सीखना पड़ेगा। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): अब आप खत्म करिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी: सर, मैं अपनी बात लम्बी न करते हुए अपील करता हूं कि सरकार को चाहिए कि इस तरह के कवानीन बनाये कि इस तरीके से जो राजनीतिक दल फायदा उठाना चाहते हैं, इलेक्शन कमीशन उनको इलेक्शन लड़ने से पाबंद कर सके। थैंक्यु वैरी मच।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी, आपने इस महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। यह एक बहुत गंभीर मसला है और मुझे खुशी है कि देश के गृह मंत्री इसको ध्यान से सुन रहे हैं या फाइलें देख रहे हैं, यह मैं नहीं जानता हूं, लेकिन अच्छा हो कि वह इसे ध्यान से सुनें और इस पर उचित कार्यवाही करें।

उपसभाध्यक्ष जी, मेरे हाथ में भारत का संविधान है। इस संविधान के अनुच्छेद 19 में नागरिकों को कुछ अधिकार दिए गए हैं। हमारे प्रमुख वकीलों में से श्री सिब्बल साहब यहां पर मौजूद हैं, वह मेरे से ज्यादा बेहतर जानते हैं। संविधान के अनुच्छेद 19 में नागरिकों को देश में कहीं आने-जाने का अधिकार है, संस्था बनाने का अधिकार है, बसने का अधिकार है, व्यापार करने का अधिकार है वगैरह-वगैरह। आप सुप्रीम कोर्ट में इन अधिकारों को बचाने के लिए बहस करते रहे हैं, जहां तक मैं जानता हूं। लेकिन मुझे अफसोस है कि आज आप और उस तरफ बहुत से वकील बैठे हैं, जो बिहार, उत्तर प्रदेश और देश के अन्य भागों के लोगों के इन संवैधानिक अधिकारों को बचाने के लिए कोई खास लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं। मुझे खुशी होती, अगर आप सब खड़े होते और वहां के निवासियों के अधिकारों को, जो वहां गए हैं, निरीह हैं, भोलेभाले हैं, रोजी-रोटी कमाने के लिए गये हैं, पेट की आग बुझाने के लिए गये हैं और उन स्थानों का निर्माण करने के लिए गये हैं, अपना योगदान करने के लिए गये हैं, उनको आप बचाते। यह अफसोस की बात है कि ऐसी कोई कार्यवाही इस सरकार की ओर से नहीं हुई है। मैं यह मानता हूं कि बहुत से मामलों में आप यह कह कर निकल सकते हैं कि यह राज्य सरकारों का विषय है, कानून और विधि का विषय है।

उपसभाध्यक्ष जी, यह छोटा सवाल नहीं है। कुछ दिन पहले असम में ऐसी घटनाएं हुयीं, वहां पर भी लोगों को भाषा के नाम पर मारा गया, निकाला गया, बाहर किया गया। उसके पहले ऐसी घटनाएं काश्मीर में हो चुकी हैं, जहां पर मज़हब के नाम पर लोगों को निकाला गया। ऐसी घटनाएं पहले पंजाब में हो चुकी हैं, वहां भी यही सवाल उठा था, जहां राज्य बनाने के नाम पर, एक खास मज़हब के नाम पर ऐसी घटनाएं हुयी थीं। अब महाराष्ट्र में इस तरह की घटनाएं दोबारा हो रही हैं, एक बार पहले भी हो चुकी हैं। मेरा कहना यह है कि इन घटनाओं को देखते हुए सारे देश में, यह केवल एक क्षेत्र में सीमित नहीं है, इसलिए केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी संविधान के अनुसार बनती है। वह केवल यह कहकर नहीं निकल सकते कि राज्य सरकार को करना चाहिए था। हां, करना चाहिए था, मैं मानता हूं कि उसे करना चाहिए था। अगर वह न करे, तो? तो ये नागरिक किसके हैं, ये नागरिक राज्य सरकार के नहीं है, ये नागरिक देश के हैं, भारत के नागरिक हैं और उनकी जान और माल की हिफाज़त करने का दायित्व संविधान ने आपको दिया है, यह जिम्मेदारी आपको दी है। इसीलिए मुझे अफसोस इस बात का है कि घटनाएं होती रहीं और राज्य सरकार जहां विफल हुयी है, वहां केन्द्र सरकार उनसे ज्यादा विफल हुयी है। मेरा बहुत स्पष्ट मानना है कि इस मामले में आपने कोई ध्यान नहीं दिया। इसलिए कई बार ऐसा लगता है कि कहीं इसमें केन्द्र सरकार की कोई एक खास नीति तो नहीं है, कहीं राजनीतिक लाभ, जिसका इशारा हमारे प्रतिपक्षी महोदय कर रहे थे, वह राजनीतिक लाभ कहीं आप ही तो उठाना नहीं चाहते कि एक पार्टी को तोड़ा जाये और फिर ऐसे हालात पैदा कर दिए जायें और उसका लाभ उठाया जाये, मैं समझता हूं कि यह नीति बहुत खराब होगी। अखबारों में इस तरह के भी आरोप आए हैं। मैं चाहूंगा कि ये आरोप गलत हों और इसके बारे में सरकार और गृह मंत्री जी स्पष्ट करें कि

इस तरह की कोई नीति नहीं है और अगर होती तो उस पर वे कड़ी कार्यवाही करेंगे। अगर कोई वहां का राजनेता, चाहे किसी भी पार्टी का हो, इस बारे में जिम्मेदार होगा, तो उसके ऊपर बराबर कार्यवाही होगी। यह नहीं कहा जा सकता कि यह सिर्फ एक छोटी पार्टी कर रही है। कभी-कभी लगता है कि इसके पीछे कुछ बड़ी ताकतों की शह है। वे ताकतें हिन्दुस्तान की भी हो सकती हैं और हिन्दुस्तान से बाहर की भी हो सकती हैं, जो इस देश को तोड़ना चाहती हैं। वे लोग इन मौकों का फायदा उठाकर, इस तरह के तमाम हालात पैदा कर सकते हैं कि एक क्रिया की प्रतिक्रिया दूसरी जगह होने लगे और देश में आग लग जाए। देश में वैसे ही काफी आग लगी हुई है, चिंगारियां जगह-जगह सुलग रही हैं। भगवान के वास्ते इस चिंगारी को मत सुलगने दीजिए। उत्तर, दक्षिण, भाषा, मज़हब और प्रांत के आधार पर इस देश को तोड़ने की जो पुरानी साज़िशें हैं, उनको सफल मत होने दीजिए। अपने राजनीतिक फायदे के लिए आप इसके ऊपर कड़ी कार्यवाही करें, यही मैं आप से कहना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूं। हमारे उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्य मंत्री पंडित गोबिंद बल्लभ पंत थे। वे महाराष्ट्र से आए थे। वे 200, 300 तथा 400 साल पहले महाराष्ट्र से गए थे। उत्तर प्रदेश ने खुले दिल से उनका स्वागत किया और उनको प्रदेश का पहला मुख्य मंत्री बनाया। महोदय, कहा जाता है कि मेरे भी पुरखे कभी महाराष्ट्र से गए थे। मुझे भी उत्तर प्रदेश ने अपनाया, बनाया और बिहार ने अपनाया, सब जगह अपनाया। आज मैं नहीं जानता कि मेरे कौन से पुरखे महाराष्ट्र से गए थे। आज मैं उत्तर प्रदेश का हूं, उत्तराखंड का हूं, कहां का हूं, मैं नहीं कह सकता। हमारे उत्तर प्रदेश के अंदर सुचेता कृपलानी जी मुख्य मंत्री बनी। हमारे उत्तर प्रदेश के अंदर आचार्य कृपलानी जी चुनाव जीते और बिहार के अंदर मधु लिमय और जॉर्ज फर्नांडिस चुनाव जीते। मैं यह सवाल पूछना चाहता हूं कि यह जो इस देश की जो एक राजनीतिक सोच थी, सामाजिक सोच थी, वह आज कहां जा रही है। आपने स्वयं इस राज्य सभा की सदस्यता के लिए कानून में परिवर्तन किया और कहा कि आप देश के किसी भी हिस्से में रहते हों, भले ही यह काउंसिल ऑफ स्टेट्स हो, लेकिन देश एक है, इसलिए देश में कहीं का रहने वाला व्यक्ति इसका सदस्य हो सकता है। स्वयं माननीय प्रधान मंत्री जी असम से चुनकर आए। वे पंजाब से नहीं चुने जा सके। यह सवाल है, हमारे देश के एक नज़रिए का, आप उसे तोड़ने की कोशिश क्यों कर रहे हैं।

महोदय, मैं इस देश की प्राचीन संस्कृति का भी उल्लेख करना चाहता हूं। मैं उत्तराखंड की बात करता हूं, बद्रीनाथ का महारावल केरल का नम्बूदरी होता है, यह परंपरा से है। कल को कोई कहे कि इसे निकालो, भगाओ, हमारे यहां भी पंडे हैं। हमने कहा कि नहीं, यह नहीं होगा। हमारे यहां इलाहाबाद में, बनारस में, मथुरा में और अयोध्या में लाखों की तादाद में बंगाल के लोग रहते हैं, दक्षिण भारत के लोग रहते हैं, महाराष्ट्र के लोग रहते हैं। बाबा साहेब अम्बेडकर, जिन्होंने यह संविधान बनाया था, वे महाराष्ट्र के ही निवासी थे। आज उसी महाराष्ट्र के अंदर इस संविधान को तोड़ा जा रहा है, आग लगाई जा रही है। यह परिस्थिति इस देश में क्यों पैदा हुई? इसकी जिम्मेदारी किसके ऊपर है? इस देश को तोड़ने की जितनी साज़िशें हैं, मैं समझता हूं कि हमें इनको नाकामयाब करना होगा। यह संविधान के विरुद्ध कार्यवाही है और संविधान की रक्षा की शपथ मैंने भी ली है और आपने भी ली है, इसलिए इसके ऊपर इस प्रकार की कोई ऐसी हरकत न होने पाए। मैं चाहूंगा कि गृह मंत्री जी केवल आश्वासन ही नहीं, बल्कि क्रियान्वित करके दिखाएं कि क्या कदम उठाए गए हैं। मुझे आज ही बताया गया है और मैं नहीं जानता कि कहां तक सच है कि आज के एक 'सामना' नाम के अखबार में फिर कुछ भड़काऊ सामग्री छपी है। अगर ऐसी सामग्री छपी है तो उसके ऊपर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए। कानून ने आपको हाथ दिए हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री तारिक अनवर (महाराष्ट्र): वह किसका अखबार है, आपको मालूम है। ...**(व्यवधान)**... वह शिव सेना का अखबार है।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: वह चाहे किसी का भी हो, इससे क्या मतलब है? ये महाराष्ट्र के जोशी हैं और मैं उत्तर प्रदेश का जोशी हूं, हम नहीं लड़ रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... हम प्रेम से बैठे हैं। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): नाम भी एक जैसा ही है। ...**(व्यवधान)**...

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: आप लड़ाना चाहते हैं, वही मैं कह रहा हूं। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): कई बार कंफ्यूजन भी होता है। ...**(व्यवधान)**...

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: सम्मानित सदस्य सुनिए, इनको और मुझको ही नहीं और आपको भी ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): एक डॉक्टर है और एक पेशेंट है। ...**(व्यवधान)**...

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री (श्री कपिल सिब्बल): जोश तो दोनों में ही है। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): नो क्रॉस टॉक प्लीज, नो क्रॉस टॉक।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: हम तो होश में ही रहते हैं, लेकिन आप होशो-हवास दोनों से खारिज हो जाते हैं। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): डाक्टर साहब, अब नो क्रॉस टॉक प्लीज।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: कभी-कभी सदन में थोड़ा वातावरण बोझिल से हट कर कुछ रुका होना चाहिए। महोदय, जब मैं पहली बार संसद में आया था, तब लोग नोक-झोंक, मज़ाक का लोग स्वागत करते थे।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): कभी-कभी हंसी में खांसी भी हो जाती है, अभी आप अपनी बात बोलिए।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: हम जब से संसद सदस्य है, ऐसा नहीं होता है। आप वहां किन्हें मार रहे हैं? टैक्सी ड्राइवर, छोटा व्यापारी है, सब्जी बेचने वाला निरीह व्यक्ति है, बिल्डिंग बनाने वाला काम कर रहा है, उसकी रोजगारी है, आपने उसे मारा, भगा दिया, वह कहां जाएगा? सवाल यह है कि आप इस देश को एक मानते हैं या नहीं मानते हैं? अगर यह देश एक है तो फिर इसकी एकता को कायम रखने के लिए सरकार को कड़ाई के साथ काम करना चाहिए।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: आपका मतलब कौन?

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: श्रीमन्, मेरा इस समय आप से मतलब गृह मंत्री जी से है।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: यानी बोलने वाले, करने वाले, लिखने वाले नहीं?

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: सभी। लेकिन बोलने वाले, करने वाले, लिखने वाले, उन सभी के ऊपर नियंत्रण और निगाह रखने वाले की जिम्मेदारी है।

गृह मंत्री (श्री शिवराज वी॰ पाटिल): वह तो है ही।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: मैं आपसे कहना चाहता हूं कि असली बात वही है। कहा जा रहा है कि छठ पूजा नहीं मनाई जा सकती। छठ किसी राज्य का त्यौहार नहीं है, यह भारत का सामाजिक त्यौहार है। कल को कोई कहे कि गणेश जी तो शिवजी की संतान थे, हिमालय से गए थे, आप महाराष्ट्र में गणपति उत्सव नहीं मना सकते। गणपति उत्सव को पब्लिक बनाने वाले महाराष्ट्र के हमारे सर्वश्रेष्ठ नेता लोकमान्य तिलक थे। आज यह क्या बात हो रही है? गोविंदा आला रे गोविंदा कहा के थे? ये तो मथुरा के थे। आप क्या करेंगे? इन सभी देवताओं को निकाल देंगे, भगा देंगे कि तुम यहां से जाओ? क्या बात हो रही है? हम कहां तक जाएंगे? किस जगह तक जाएंगे। सभी को रोकने की बहुत जरूरत है। हमारे देश को एक रखने में इन त्यौहारों, भाषाओं, बोलियों ने बहुत मदद की है। आप देखें कि यहां से पानी लेकर रामेश्वरम् में चढ़ाया जाता है, कांवड़िया एक जगह से लेकर दूसरी जगह जाता है, जियारत के लोग एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं। क्यों जाते हैं? इसलिए कि सारा देश एक है, इस देश की एकता के लिए यह सब तैयार किया गया था। कन्याकुमारी दक्षिण में है, कैलाश ऊपर, वहां असम में ...**(व्यवधान)**...

श्री मंगनी लाल मंडल:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Please sit down. No interruptions please ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

---

*Not recorded.

Interruptions will not go on record. मंडल जी, डिस्टर्ब मत कीजिए। बोलने दीजिए। ऐसे तो हाउस को रात के आठ बजे तक चलाना होगा। आप बोलिए।

डॉ मुरली मनोहर जोशी: मैं बड़ी विनम्रता से कह रहा हूं। मैंने किसी पार्टी का नाम नहीं लिया है। मैंने जो तथ्य रखे हैं, आप उनको सहन करें। अगर तथ्य गलत हैं तो आप मेरे नोटिस में ले आएं, मुझे कोई एतराज नहीं होगा। लेकिन अगर आप जातीय, भाषायी, मजहबी, वोट बैंक और क्षेत्र की राजनीति करेंगे तो ये नुकसान होंगे। यह कोई भी पार्टी करे, मैंने तो किसी पार्टी का नाम नहीं लिया है, कोई भी करे, कहीं भी करे, उसका नुकसान तो होगा। अगर किसी को तात्कालिक वोट का फायदा हो गया और देश का नुकसान हो गया तो इसमें आपको क्या एतराज हो रहा है? इसमें आपको क्या परेशानी है? एक समय जातीय राजनीति की गई, उसके नुकसान देश आज तक भुगत रहा है। आप आगे भी करना चाहते हैं। यह भाषायी राजनीति की जा रही है, जातीय राजनीति की जा रही है, क्षेत्रीय राजनीति की जा रही है इसके नुकसान आप आगे भुगतेंगे, मजहबी राजनीति के भुगतेंगे। क्यों नहीं भुगतेंगे? सवाल यह है कि आप इस बात को शाइस्तगी से सोचने के लिए तैयार हैं या नहीं हैं? हर बात में कि आपकी पार्टी यह कर रही है, आज सवाल पार्टी का नहीं है, शिवसेना का आप नाम ले रहे हैं या किसी और का ले रहे हैं, वहां जो करने वाले हैं, वे सब सेना के सदस्य नहीं हैं।

श्री मंगनी लाल मंडल:*

डॉ मुरली मनोहर जोशी: मेरे बगल में तो कभी-कभी आप भी बैठ जाते हैं, मैं क्या करूं? यह तो सवाल ऐसा है कि बहुत सी बात जब संयुक्त सरकारें उत्तर प्रदेश और बिहार में बनी हैं तो आप हमारे बगल में भी बैठे थे। यह क्या बात है। बगलगीर तो इस देश की राजनीति में होते ही रहेंगे। यहां कोई परमानेंट दुश्मन नहीं होता है। कॉलीशन बनते हैं, इधर भी होते हैं, उधर भी होते हैं, मेरा कहने का तत्पर्य यह है कि अगर इस बात पर आप गहराई से बात करने के लिए तैयार हैं, तो मैं सबसे पहले गृह मंत्री जी से यह अनुरोध करूंगा, क्योंकि वे महाराष्ट्र के ही निवासी हैं, नेता हैं, वहां से ही प्रतिनिधित्व करते हैं, कि वे इस बारे में ज्यादा ध्यान दें। मैंने उनका लोक सभा का भाषण पढ़ा है। मुझे खुशी हुई जब आपने कहा कि अनकांस्टीट्यूशनल काम नहीं होने दिया जाएगा, संविधान की रक्षा होनी चाहिए। यह सही बात है, लेकिन वह रक्षा शब्दों से नहीं, बल्कि एक्शन में दिखाई देनी चाहिए, फुर्ती से दिखाई देनी चाहिए। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि अगर देश में कहीं प्रतिक्रिया होनी शुरू हो गई तो इसके भारी दुष्परिणाम होंगे। मुझे इस बात का फख्र है कि पंजाब की घटनाओं में भारतीय जनता पार्टी के सैकड़ों लोग मारे गए, लेकिन हमने प्रतिक्रिया नहीं होने दी। असम की घटनाओं में हमने प्रतिक्रिया नहीं होने दी। मैं बिहार के लोगों को बहुत बधाई देना चाहता हूं, उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने संयम से काम लिया है और मैं आशा करता हूं कि वे आगे भी संयम से काम लेंगे। मैं इस प्रतिक्रिया के घोर विरोध में हूं। हो सकता है कि वहां हमारे दो-चार पांच सौ लोग नुकसान खा जाएं, लेकिन अगर हम इधर से प्रतिक्रिया करेंगे, तो वह भी देश के लिए नुकसान करेगा। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं, यह कहना चाहता हूं कि यह क्षुद्र राजनीति आप क्यों चलने देते हैं? यह आरोप क्यों लग रहा है कि कांग्रेस वहां कुछ करना चाहती है? अगर यह गलत है, तो भगवान के वास्ते इसे जल्दी दूर कीजिए और ऐसा न होने पाए कि लोग यह समझें कि आप यहां करवाने के बाद और फिर उसके ऊपर केवल कुछ शाब्दिक वाणी डालना चाहते हैं। कृपया इसको संजीदगी से लीजिए, सच्चाई के साथ लीजिए। अगर इसमें कहीं कोई ऐसी चाल भारत के बाहर के लोगों की है, तो उस पर भी कड़ी निगाह रखिए। मुझे कभी-कभी इस बात का खतरा लगता है कि ऐसे मौकों पर भारत को तोड़ने वाली ताकतें इसका लाभ उठाती हैं। कई बार वे ऐसी घटनाओं को करवाती हैं और उसके बाद देश में आग लगाती हैं। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इसको गहराई से देखें और इस बात की गारंटी दें कि भारत के प्रत्येक नागरिक के जान और माल की हिफाजत करना, उसको सुरक्षित रखना, उसके fundamental rights को सुरक्षित रखना, यह आपका कर्त्तव्य भी है और देश की unity और integrity को भारत के संविधान के प्रिएम्बल में कहा गया है, सरकार के ऊपर इसको लाजिम किया है, आपने संविधान की शपथ ली है, तो यह आपका भी कर्त्तव्य बनता है। जब मैं कहता हूं आप, तो आपकी तरफ विशेष, लेकिन इस पूरे सदन का कर्त्तव्य बनता है, क्योंकि हममें से हरेक यहां संविधान की शपथ लेकर बैठा है। उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे अवसर दिया और इस महत्वपूर्ण मसले पर विचार रखने की अनुमति दी।

*Not recorded.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Before we go to the next speaker, there is one Special Mention which is left out. Shri O.T. Lepcha.

SPECIAL MENTIONS—*Contd.*

Need to take effective measures to maintain communication link on the National Highway 31-A, during Calls of Bandh

SHRI O.T. LEPCHA (Sikkim): Hon. Vice-Chairman, Sir, I would like to draw the kind attention of the Central Government to the disturbance caused by some regional political parties of Darjeeling district in West Bengal resorting to frequent strikes, and as a result of that the entire communication system is paralysed and the people of Sikkim are the worst sufferers since 1985.

Sir, as you are all aware, being a land-locked State, there is no air link, rail link and other alternative highways. The only life-line is National Highway 31-A. In this regard, it may be mentioned that whenever such type of a call for strike or bandh in this region is given by any political party in West Bengal, the entire transport and communication system is totally paralysed. This is a very serious matter and the Central Government should take effective and necessary steps to restore the communication system, especially on National Highway 31-A, in the interest of the people of Sikkim. The Government should intervene in the matter.

Therefore, I urge upon the Central Government to look into the matter serious and take appropriate action in the interest of Sikkim State. Thank you.

SHORT DURATION DISCUSSION—*Contd.*

Recent incidents of attacks on North Indians in various parts of Maharashtra

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Shri Amar Singh. Your party has ten minutes, but you have two speakers.

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश): धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय। सर्वप्रथम मैं बहुत विनय के साथ अपने सम्मानित अन्य साथियों से कुछ कहने से पहले क्षमा चाहूंगा कि अगर मेरे वक्तव्य से उनकी भावनाएं आहत हों, तो मैं अपनी क्षमा याचना के साथ अपनी बात कहना चाहूंगा।

राजनीति में, समाज में सत्य से बड़ा सत्य अवधारणा का होता है। सत्य वह होता है, जो दिखता है। इसलिए इस पूरे प्रकरण को मैं आप द्वारा दिए गए समय की सीमा के अन्दर बड़ी साफगोई से रखना चाहूंगा, क्योंकि इस पूरे प्रकरण में मेरी तथाकथित भूमिका की भी काफी चर्चा हुई। उत्तर भारतीय हजारों की संख्या में नासिक छोड़ कर जा रहे हैं, पूणे छोड़ कर जा रहे हैं, प्रोजर्टीज़ की distress sell हो रही है। और यहां तक ऐसा भी हुआ है कि रेलवे कंपार्टमेंट के शौचालय में प्रसव तक की घटना की सूचना आई। मैं कहना चाहूंगा कि मुम्बई में शिवाजी पार्क में रैली करने के लिए, आदरणीय गृह मंत्री जी को मैं आपके माध्यम से बताना चाहूंगा कि महीनों पहले हमने अधिकृत रूप से सूचना दी थी और स्वीकृति ली थी। शिवाजी पार्क की हमारी रैली उत्तर भारतीय के समर्थन में अथवा छठ पूजा के लिए नहीं थी। यह रैली किसानों की समस्याओं के लिए यूनाइटेड नेशनल प्रोग्रेसिव एलायंस ने आयोजित की थी और कई भूतपूर्व मुख्यमंत्रियों की उपस्थिति में हुई थी। इसमें चंद्रबाबू नायडु जी, मुलायम सिंह जी, फारूक अब्दुल्ला जी, चौटाला जी और बाबू लाल मरांडी भी थे। मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री जी के संज्ञान में लाना चाहूंगा कि उसमें चार पूर्व मुख्यमंत्री Z+ category के थे। इसके बावजूद इस रैली से एक दिन पहले मैं मुम्बई गया और मराठी पत्रकार संघ में मैं पत्रकार वार्ता कर रहा था। उपसभाध्यक्ष